दशम् मण्डल

'एँ! श्वेतजन?'

ओहि नाग-युवालोकनि सभसँ ई समाचार सुनि यमुना तटक नाग दलपति चौंकि उठल। विस्मित रहि गेल। पुनः अपन भाषामे नाग दलपति रमट पुछलक-'अहाँलोकनि ठीके देखलहुँ?'

'हँ, रमट राजा, स्पष्ट देखलहुँ, ओ श्वेत आर्ये अछि।' ओ नाग-युवा उत्तर देलक आ समर्थनमे अन्य युवासभ दिस तकलक।

सभ स्वीकृतिमे अपन माथ हिलौलक आ सिसकारी भरि क' एहि बातक सत्यता पर जोर देलक।

नाग-जन सेहो आव आर्ये जकाँ अपना दलपतिकें राजा कहय लागल अछि। ईहो शब्द ओकरे सभक थिक। अपितु यैह शब्द नाग-जातिक परम्पराकें बदलि देलक।

पूर्वकालमे भिन्न-भिन्न नागकुलक अम्बे अपन-अपन कुलक दलपति होइत छलि। किन्तु जखन आखेटक लेल अजास, शिग्रू, यक्षु, कीकट आ किरात सभमे परस्पर संघर्ष बढ़य लागल आ पशुपालन प्रारम्भ भ' गेलासँ गृहकार्येमे अम्बा सभक व्यस्तता बढ़य लागल तखन पुरुषे दलपति होव' लागल छल। फेर ओ कुलप लोकनि अपन संगठनक लेल एकटा दलपतिक निर्वाचन कयलक जे तीर चलयवामे पटु होइत छल आ प्रौढ़ सेहो।

आइसँ किछुए पीढ़ी पूर्व नागसभक पूर्वज दृषद्वती तट पर छल। किन्तु राजा सुदासक समयमे, हुनक आक्रमणक आतंकसँ यमुना दिस भागि आयल छल। ता परुष्णी तटक दशराज्ञ महायुद्ध भ' गेल छल। तहियेसँ एहि पश्चिमी तट पर अछि। किछु पूर्वी तट पर सेहो बसि गेल।

किन्तु जहियासँ पश्चिमी तटसँ किछुए दूर हँटि क' किछु अपरिचित हलचल प्रारम्भ भेल अछि, तहियासँ शनैः शनैः प्रायः सभगोटे पूर्वी तट पर आबि बसि गेल अछि।

काष्ठदुर्ग बनबयबला कृष्णजन अपेक्षाकृत एहि नागसभसँ दीर्घाकार अछि, आ ओसभ शुद्ध अनास अछि। अनास ईहो सभ थिक किन्तु एकरा सभक आकारो छोट होइत अछि।

आ एहि लघु आकारक कारणे ई सभ अन्य जनसँ डरैत रहैत अछि।

ओहि अग्निस्थानक निकट बैसल सभटा नागजन चौंकि उठल। डरि गेल। पुछलक-'बर्बर आर्य?' एक-दोसर दिस भयभीत मुद्रामे ताकय लागल।

-'एकसरे अछि।' नागराजा रमट पुछलक।

-'एकसरे।' ओ नागयुवा उत्तर देलक।

-'आ अस्त्र-शस्त्र?'

-'ओकरा लग नञि छै, किछुओ नञि छै, मात्र एकटा कम्बल ओढ़ने अछि।'

-'कम्बलक तरमे कोनो अस्त्र-शस्त्र?'

-'नञि राजा, ओकरा लग कोनो अस्त्र नञि छै।

सभटा नागयुवा यैह बात कहलकै।

उपस्थित सभटा नागजन चकित रहि गेल। आर्यजन तँ अस्त्र-शस्त्रहीन कखनो नञि रहैत अछि? ई ओकर अभ्यास नञि थिक।

रमट पुछलक -'ओकरा लग कोनो अश्व?'

-'अश्वो नञि छै। लगोपासमे कतहु नञि देखलियैक।'

-'कतय देखलहुँ?' रमट पुछलक।

-'ओहि पार।'

-'तँ एकसरे एम्हर की करय आयल अछि?'

-'यैह ज्ञात नञि भ' सकल।'

-'ज्ञात भ' सकैत छल, किन्तु...?'

एकटा नागयुवा बीचेमे अटकि गेल।

-'किन्तु की?' राजा पुछलक।

-'ई, ओ संकेतसँ कहलक--ओकरा तीर मारि देलक।'

-'तीर लागि गेलै?'

-'लागि गेलै राजा।'

-'ओ पैघ छलै?'

-'हँ राजा।'

-'तखन?'

-'ओतहि खसि पड़ल, किन्तु ओ कोनो चित्कारो नञि कयलक, मात्र वृक्ष तर खसि क' सूति रहल।'

-'सूति रहल?'

-'लागल एहिना किन्तु ओकर आकृति संभव पीड़ासँ विकृत भ' रहल छलै, ओ अति दुर्बल सेहो छल, संभव असक्य...।'

-'तीर कतय लागल छलै?'

-'हाथमे।'

रमट जेना किछु आश्वस्त भेल। एकबेर आकाश दिस तकलक, बाजल-'किन्तु आब तँ अन्हार होब' जा रहल अछि, वन्यपशु खा जेतै?'

'संभव...ओ तटक आवासे दिस आवि रहल छल, जखन ओकरा तीर लागल छलै...ओहि पारक किछु नागो सभ देखने छलै, ओम्हर दौड़बो कयल छलै। भ' सकैत अछि, वैह सभ मारि देने हो, या...।'

'अहाँसभ दौड़ू। रमट राजा आदेश देलक।

'जा जँ जीवित होइ तँ ओकरा शीघ्र उठा आनू।'

राजाज्ञा अनिवार्य मानल जाइत अछि। किछु नागयुवा भागल। भागय मे ओ सभ बहुत तीव्र होइत अछि। ओकरा सभकें तीव्रतासँ नुकाबय सेहो अबैत छै आ तीव्रतासँ भागय सेहो अवैत छै। आ अपन एहि गुणक कारणे नागजन अजेय रहल अछि।

ई श्वेत बर्बर आर्य, अति अशुभ होइत अछि।

किछु काल धरि सभ क्यो चिंताग्रस्त रहल।

नागसभमे वयोवृद्ध राजा रमट-जनक, तक्ष चिन्तित मुद्रामे कहलक-'रमट।'

'हँ तात!' रमट जेना कोनो चिन्तासँ घूरल हो, अपन वृद्ध पिता दिस देखलक।

सभ उपस्थित नागजन वृद्ध दिस देखय लागल। ओ बहुत आदरणीय मानल जाइछ। वृद्धो हेबाक कारण आ एहिसँ पूर्व राजा हेबाक कारणे सेहो। ओ स्वेच्छासँ राजपद अपन पुत्रकें द' देने छल। आब ओ युद्ध नञि क' सकैत छल आ ने तीव्र भागि-ए सकैत छल। आब मुखमे दाँतो नञि छै। वृद्ध बाजल --'ई अहाँ नीक नञि कयलहुँ, ओकरा एतय अनबाक आज्ञा कियैक?...श्वेत आर्य बहुत अशुभ होइत अछि। हमरा अपन पूर्वज सभसँ ई बात ज्ञात अछि, ओ अति बर्बर होइत अछि...।'

छलै। किन्तु अजास सभ अपन पटुतासँ ओकरा सभकें आरो पूब दिस ठेलि देलक। अपितु ओकरा सभकें गंगा-पार करा देलक।

गंगा पारमे, यक्षु आ पिशाच जन तथा किरात आ कीकट जन छल।

शिग्रू तथा शिम्यू सभ मीलि क' ओहि पिशाच तथा यक्षु सभकें उत्तर-पूर्व दिस एवं किरात-कीकट सभकें दक्षिण-पूर्व दिस ठेलि देलक।

एहि उथल-पुथलमे, वृद्धलोकनिसँ विनु पुछलन्हि, रमट राजा एकटा अद्‌भुत कार्य कयलक, जकर बहुत नीक परिणाम बहरायल आ एहि कारणे ओकर बहुत प्रशंसा भेलै तथा सम्मान बढ़लै आ ओकरासँ नागजन बहुत भयभीत रह' लागल एवं ओकर आज्ञा अनुलंध्य भ' गेल।

ओ अजास-जनसँ मित्रता क' लेलक। किछु दिन धरि तँ परस्पर लड़ल। पाछाँ मित्रता क' लेलक। रमट सोचलक जे ई भूमि तं अजासे-जनक थिक, वैह सभ पाछाँ आयल अछि।

एकरा सभकें कृषि लेल अधिकाधिक भूमि चाहवे करी। तें एक दिन चुपचाप, एकसरे, डरैत-डरैत अजास राजाक निकट पहुँचल। एक-दोसरासँ परिचित तँ छलैहे किन्तु शत्रुक रूपमे।

एकसरे, अस्त्र-शस्त्रहीन रूपमे रमट राजाकें देखि, अजास राजा चकित रहि गेल छल।

दुनूमे बात निश्चित भेल, दुनू मिलिकें एहि शिग्रु आ शिम्यू सभकें, आगाँ ठेलिक' गंगा पार करा दी। एहिसँ दुनू जनकें पर्याप्त भूमि कृषि लेल सेहो भ' जायत आ पर्याप्त वन्य पशु सेहो सुरक्षित रहि जायत।

रमट राजाक बात रहि गेल छल।

ओ अति प्रसन्न भावसँ घूरि आयल छल।

नागजन सेहो प्रसन्न भेल। आ ओहि युद्धमे अजास सभक संग देलक।

शिग्रू आ शिप्यूजन गंगा पार क' गेल।

फेर ओ दुनू सेहो, नाग तथा अजास सभक देखा-देखी परस्पर मीलि गेल आ मिलि क' ओहि यक्षु, कीकट तथा किरात सभकें दूर-दूर धरि भगा देलक।

ओही दिनसँ अजास आ नाग सभमे मैत्री चलि आबि रहल अछि।

ओही दिनसँ अजास आ नाग सभक सुविधा तथा शान्ति बढ़ि गेल छल।

ओही दिनसँ रमट राजाक मनमे अस्त्र-शस्त्रहीन एकसर जन पर दया-भाव आवय लागल छलै। नागजन जनैत छल जे रमट राजाक दया-भाव ओकर कायरता नञि थिक।

रमट राजासँ सभटा नागजन उपकृते छल। अनुगृहीते छल। तें विरोध सम्भव नञि।

एखन किछु क्षण पूर्व नागजन अपन नाग राजाक निकट एक विशेष उद्देश्यसँ बैसल छल। ओही काल, ओ युवक सभ श्वेत बर्बरक समाचार देलक।

ओहि श्वेत बर्बरकें आनय ओ नाग युवक जा चुकल छल।

अन्हार पसरल छल। शीत बढ़ि गेल छलै। बीचक अग्निस्थान अपन विस्तृत रूपमे प्रज्ज्वलित छल। एहिसँ वन्यपशुओक भय नञि रहैत अछि।

नागग्रामांचलमे एहि प्रकारक पैघ-पैघ अग्निस्थान राति भरि जरिते रहै छै। एहि पर ओ सभ आखेट पशुकें पका-पका क' खाइत अछि।

वातावरणमे मांस पकेवाक गंध पसरि रहल छल। राजा स्वयं ओहि पकैत पशुकें बीच-बीचमे उनटा-पुनटा रहल छल।

लोक तृप्तिभावसँ बैसल देखि रहल छल।

बहुत पूर्वेकालमे किछु अजासजन, जाहि समयमे राजा सुदासक आक्रमण एम्हर भेल छलै, सरस्वती पार क' मैत्री-भावमे रहबाक लेल पूर्वी दस्युग्राममे चलि गेल छलै। ओ लोकसभ एहन छल जकरा कृषि-कार्ये नीक लगैत छलै, आखेट आ पशुपालन नञि।

ओही दिनसँ अजासजनक सुरसतीक तटसँ यदाकदा आवाजाही होब' लागलै। किछु दिन पूर्व आर्यलोकनिक धेनुहरण क' ओसभ ल' अनलक आ यमुना पार करा देलक।

वृद्ध तक्ष ई कथा अपन भाषामे कहलक-'हमरा ज्ञात अछि, आर्यजन एहिपर बहुत क्रुद्ध होइत अछि, ई क्रोध ओकर परम्परागते थिक, धेनुहरण पर ओ सभ युद्ध अवश्ये करैत अछि। ई बात हमरा पूर्वजसँ ज्ञात अछि। जँ ओकरा सभकें पता चलि गेलै जे ओकरसभक धेनु कतय अछि, तखन ओसभ निश्चये आक्रमण क' देत। आ आब ओसभ बदलि गेल अछि, अकारण ने आक्रमण करैत अछि आ ने अकारण मारिते अछि। किन्तु कारण भेलापर, विशेषतः धेनुहरण पर छोड़बो नञि करैछ, बर्बरतापूर्ण रूपसँ मारबो करत आ जे बचल रहि जायत, तकरा दासो बना लेत।' वृद्ध तक्ष बाजि क' गम्भीर भ' गेल।

राजा रमट सुनि क' चौंकि उठल। ओकरा ई बात ज्ञात नञि छलै।

'एना ओसभ कियेक कयलक?'

'ज्ञात नञि।'

'कतेक दिन पूर्व?'

'किछुए दिन।'

'किन्तु कोनो आक्रमण तँ भेल नञि। संभव ओसभ बिसरि गेल हो।' नागराज रमट चिन्तित स्वरमे बाजल।

'सम्भव--वृद्ध तक्ष बाजल--किन्तु ओसभ धेनुहरणकें बिसरि जाय, एहन तँ सुलनहुँ नञि। ओकर सभक सभटा युद्धतँ धेनुहरणे ल' क' होइत रहल अछि।

ता ओ युवा-दल ओहि अपरिचित श्वेत-वर्बरकें अपना कान्हपर लदने आबि गेल छल आ अग्निक निकटे राखियो देलक।

सभ उठि-उठि क' देख' लागल।

वास्तवमे ओ श्वेत आर्ये छल। अनेक लोक आर्यकें चिन्हैत अछि।

किन्तु एखन ओ चेतनाहीन छल। आँखि मूनल छले। देखवामे अति दुर्बल आ निरीह लगैत छल। अति श्वेत, उच्चाकार, श्मश्रुल, मृगचर्मधारी, सुतीक्ष्ण नासाग्र आ पीड़ित मुखमंडल।

'जीवित अछि, जीवित अछि।' अनेक जन बाजि उठल।

ता लगपासक खोपड़ीसँ दलक दल स्त्री-पुरुष आबि-आबि क' देखय लागल। देखय लागल आ छूब' सेहो लागल। बहुत गोटे एखन धरि आर्यकें देखबो नञि कयने छल। ओ सभ आबि-आबि क' देखय लागल।

ओ श्वेत बर्बर बहुत निरीह लागि रहल छल।

एहि बीच ओ कुहरि उठल। ओकर दहिना हाथसँ एखनो शोणित बहैत जा रहल छले। तीर किछु गहींर धँसि गेल छले।

इषा झुकि क' देख' लागलि। ओकरामे बहुत दया-भाव छै। वैह उपचारीकें उपचार करबाक संकेतो देलक।

नागराज रमट चौंकल। उपचार? आर्यजनकें जीवित करबाक उपचार? किन्तु इषाक तीव्र इच्छा देखि क' विवश भ' गेल। उपचारीकें संकेत क', देलक।

उपचार प्रारम्भ भ' गेल।

जे राति भरि खेलि-खेलिकें ओहि श्वेत बर्बरकें मारयवला छल, ओ सभ निराश भ' उठल। दुखी भ' गेल।

दुखी भ' गेल वृद्धजन सेहो। स्वयं वृद्ध तक्ष सेहो किन्तु ओहो विवश भ' गेल, बहुत दिनक पश्चात इषाकें प्रसन्न देखैत छल। ओकर प्रसन्नतामे बाधा

नञि देब' चाहैत छल। तैयो ओ अपन ठोर पटपटौलक-'ई बहुत अशुभ थिक, आर्यजन बहुत अशुभ होइत अछि, ज्ञात नञि नाग सभक की होयत?' इषा एकमात्र बेटी, प्रिय बेटी।

किन्तु इषाक आकस्मिक प्रसन्नता आ ओहि श्वेत बर्बरक प्रति ओकर तत्परता देखि क' चुप भ' गेल, विवश।

विवश नागराज रमट सेहो छल। ओ ओकर उपचार नञि चाहैत छल, वस ओकर अपन मृत्युक मात्र दर्शक बनय चाहैत छल।

किन्तु इषा तँ ओकर उपचार करा रहल छलि।

तैयो नागजनकें प्रसन्नता छलै जे ओकर आँखि नञि खुजि रहल छलै। प्रायः मरिये जायत।

आधा राति वितैत-वितैत ओकर सभक उत्सुकता समाप्त भ' गेल छलै, लगपासक खोपड़ीकें छोड़ि शेष लोक चलि गेल छल। चलि गेल छल आखेटक तैयारीमे।

प्रातःकाल पशु पानि पीवय नदी तट अबैत अछि, अबिते रहैत अछि, ओहि समय आखेट सुगम होइत अछि। बहुत पशु एके संग, एके स्थानपर बिना वन्य-प्रवेशेक भेटि जाइत अछि।

आखेटक लेल यैह उपयुक्त समय मानल जाइत अछि।

ई सभ रातियेमे जगैत अछि आ दिनमे सूतैत अछि। यैह प्रथा अछि नाग सभमे, यैह अभ्यास अछि। अपितु वन्य-जन सभमे यैह परम्परा अछि।

ई परम्परा पूर्वेकालसँ चलि आबि रहल अछि। सम्भव रक्षेक दृष्टिसँ कहियो ई परम्परा बनल होयत। एहि परम्पराक आवश्यकता एखनो बनल अछि, यद्यपि वन्य-प्रान्तर क्रमशः दूर होइत जा रहल अछि, जनसंख्या वृद्धिक संगहि आवासो विस्तार निरंतर होइत जा रहल अछि।

अन्तमे उपचार क' ओ प्रौढ़ नाग सेहो आखेटमे चलि गेल छल।

रमट सेहो चलि गेल। नञि, एकरासँ कोनो आशंका नञि अछि। हेबो करत तँ इषा तँ अछिए। दाँत काटबामे ओहो तँ निपुण अछि।

सभ चलि गेल।

वृद्ध आ शिशु सुतबा लेल चलि गेल।

मात्र इषा लग किछु नाग-युवती रहि गेलि, जकरामे उत्सुकता एखनो शेष छलै।

इषा ओकरा खीचि क' आगिक आरो निकट ल' अनलक। एहि बीच किछु नाग-युवती ओकर अंगो-प्रत्यंग देखि नेने छलि।

इषा प्रसन्न भ' उठल छलि।

इषा बीच-बीचमे देखि लैत छलि। ओकर देखबाक ढंगो अद्‌भुत छलै, ओ अपन मुँह ओकर नाक लग सटा क', बहुत-बहुत काल धरि ओकर सांसक अनुमान लगबैत छलि।

सांसक गति तीव्र होइत जा रहल छल, किन्तु गति अति मंद छलै। तैयो ओ प्रसन्न भ' रहल छलि।

ओकर कुहरबाक अंतराल क्रमशः कम भेल जा रहल छलै।

किन्तु ओकर आँखि नञि खुजि पावि रहल छलै, जकर ओकरा अति उत्सुकता छलै।

नाग स्त्री सभमे रातिकें सुतबाक आ दिनकें जगबाक प्रथा छै, पुरुषक विपरीत।

किन्तु आइ ओकरा निन्न नञि आवि रहल छलै। जा ओकर आँखि खुजल नञि देखि लेतै, ता ओकरा आइ निन्न नञि हेतै।

आ ओकर आँखि खुजिए नञि रहल छलै।

ओकर आँखि खुजलै प्रातः, बहुत पश्चात्। खुजल आ फेर बन्न भेल। ओकर कुहरब बढ़ि गेलै।

इषा निरंतर देखि रहल छलि। ओकरा बहुत दया भ' रहल छलै। किन्तु निरूपाय छलि। जे उपचार ओकरा ज्ञात छलै आ उपचारी बुझा गेल छलै, क' देने छलि। आब मात्र साँस रोकने देखैत जा रहल छलि।

प्रातःसँ पूर्वे अपन सखी सभक सहायतासँ ओकरा उठा क' अपन खोपड़ीमे ल' अनने छलि। प्रायः सभटा सखी एहि समय धरि चलि गेल छलि।

किछु नव स्त्री सभ सेहो आवि-आवि देखि गेल छलि, जे राति नञि आवि सकल छलि।

एहि नव स्त्री सभ सेहो आवि-आवि देखि गेल छलि, जे राति नञि आवि सकल छलि।

एहि समय खोपड़ीमे मात्र लगपासक किशोरे टा छलै। अपितु ओकर सभक हल्लासँ ओहि श्वेत बर्बरक आँखि खुजलो छलै।

एहि बेर जे ओकर आँखि खुजलै तँ बहुत काल धरि खुजले रहलै। धीरे-धीरे ओकर चेतना घूरि रहल छलै।

सर्वप्रथम ओकर दृष्टि ओहि नाग युवती इषा पर पड़ल। वैह ओकरा निकट बैसि अति उत्सुकता तथा तत्परतासँ देखि रहल छलि। ओकर आकृति पर एक प्रकारक करुणा छलै, जकरा देखि ओ थोड़ेक आश्वस्ते भेल। कृष्ण-कन्या। छोट-छिन।

ओकरा तकैत देखि नाग-शिशु डरि जकाँ गेल छल। सहमि क', सहटि क' इषाक पाछाँ आबि ठाढ़ भ' गेल छल। ठाढ़ भ' गेल छल चुपचाप।

ओ चारुकात तकलक।

छोट सन खढ़-पातक खोपड़ी छलै। ओही खढ़-पात पर सुतलो छल, देह पर ठीकसँ ओकर अपने कम्बल छलै, लगैत अछि किओ ठीकसँ ओढ़ा देलक अछि।

एहि बीच ओकरा तीव्र पीड़ाक अनुभूति भेलै। ओकर ध्यान अपन हाथपर गेलै। धीरेसँ ओकरा बहार कयलक, ओ कृष्ण-कन्या कम्बलकें हटब' मे सहायता देलकै।

शोणितक बहब बन्न भ' गेल छलै किन्तु पीड़ा बढ़िए गेल छलै। ओ एकटा हल्लुक सन सित्कार कयलक। आकृति पर पीड़ा उभरि अयलै। ओ अपन ठोर चाटलक। हाथकें पुनः धीरे-धीरे अपन स्थान पर राखि लेलक।

ओ कृष्ण-कन्या पुनः कम्बल ठीकसँ ओढ़ा देलक। ओढ़ा देलक बहुत सावधानीसँ, बहुत आग्रहसँ, बहुत स्नेहसँ।

ओ प्रभावित भेल। ओकरा सुख भेटलै। ध्यानसँ देखलक, ओ युवती छलि, पूर्ण युवती, आकारमे छोट, तन्वंगी, सघन रंग, किन्तु छोट सन आकर्षक मुखाकृति।

ओकरा मुखाकृति पर क्षण-क्षण भाव आबि आ जा रहल छलै। ओकर दृष्टिमे अपार उत्सुकता छलै, एक प्रकारक व्यग्रतो। एक प्रकारक ममतो। एक प्रकारक स्नेहो।

ओकरा अपना दिस एहि प्रकार तकैत देखि ओ विहुँसलि।

ओकरा मोनमे प्रश्न अयलै-ओ कतय अछि? कोन स्थान पर? ई युवती के थिक? एकरामे एहन उत्सुकता कियैक छै? आ ई करुणा? ई के? आकार

तँ अपेक्षाकृत छोट अछि! दास स्त्रीक आकार तँ एते छोट नञि होइत अछि? शिशु किशोरो छोट-छोट आकारक अछि? ई सभ के थिक? ओ कतय अछि?

ओकरा मोन पड़लै। ओ बढ़ैत-बढ़ैत खोपड़ी सभ दिस अबिते छल ता हठात् बहुत जोरसँ हाथमे तीर लगलै। ओहि तीरक पीड़ा भयानक छलै। ओ चेतनाहीन होब' लागल। एतबा धरि मोन रहलै जे निकटेमे एक अति विशाल वृक्ष अछि, ओतहि आबि बैसि रहल। फेर तकरा बादक कोनो बात ओकरा मोन नञि रहलै। चेतना शून्य होयबासँ पूर्वे ओकरा लागल छलै, जेना किछु लोक निकट आयल अछि, छूबि-छूबि देखि रहल अछि, किछु-किछु बाजि सेहो रहल अछि, भाषा अपरिचित छलै। प्रायः ओ मृधवाक् अछि।

ताधरि ओकर चेतना पूर्णतः लुप्त भऽ गेल छलै। एम्हर अनेक दिनसँ किछु खयनहुँ नञि छल। ओही दिनसँ...।

ओकरा बहुत जोरसँ पिआस लागलै।

ओ युवती निकटेमे बैसलि निर्निमेष दृष्टिसँ ओकरे दिस तकैत जा रहल छलि। तकैत जा रहल छलि अति उत्सुकतासँ, ममत्वपूर्ण भावसँ।

आब ओकर सम्पूर्ण चेतना घूमि आयल छलै। ओ अपन ठोर चाटलक। बाजल--'जल।'

ओकर स्वर सुनि ओ कृष्ण-कन्या चौंकि उठलि। तँ ई बाजियो सकैत अछि।

किन्तु ओ तुरत उदास भ' उठलि। ओ की चाहैत अछि, ओ बुझि नञि सकलि। ओ व्यग्र भ' उठलि, चिन्तित।

ओ बुझि गेलि। ई भाषा नञि बुझि सकति। ओहो चिन्तित भेल। किन्तु शीघ्रहि ओ पानि पीबाक संकेत कयलक।

ओ बुझि गेल एहि बेर। ओ अति शीघ्रतासँ बाहर दिस भागलि। आ अति शीघ्रतामे एकटा काष्ठ-पात्रमे पानि ल' अनलक।

पात्र कोनो अधिक छोट नञि छलै, तैयो ओ लगातार तीन-चारि बेर पीबि गेल। ओ जखनधरि पिबैत रहल, ओ अति तत्परता सँ दौड़ि-दौड़ि क' आनि-आनि पियबैत रहलि।

ओ फेर ओकरा पानि पिया क' अति कोमलतासँ सुता देलक।

हठात इपाकें किछु मोन पड़लै। ओ दौड़ि क' बहरायलि आ आँगनमे वृद्धा तथा सहोदर-पत्नी मांस पका रहल छलि, किछु टुकड़ी काटि क' एकटा मृत्तिका पात्रमे ल' आनलि। पात्रमे पानियो छलै।

ई देखि ओ चौंकि उठल।

ताधरि चौंकबाक शक्ति ओकरा भ' गेल छलै। ई कृष्ण-कन्या के थिक? कियैक अछि एकरामे एतेक करुणा? एतेक ममत्व। के थिक ई? कतय अछि ओ?

ओ आवि क' ओहि मांस-पात्रकें राखि देलक आ सहायता द' क' ओकरा उठाव' लागलि। ओ छोट-सन अछि, अति मृदुल, मसृण, तत्वंगी। ओ जानि गेलि जे ओकरासँ उठायब संभव नहि अछि।

ओ ओकर तत्परता देखि चकित रहि गेल। पीड़ाकें सहैत, ओकर मोन रखबाक लेल स्वयं उठि क' पुनः बैसि गेल। बैसि गेल थोड़ेक सहायता पाबिक'।

ओकर मोन रखबाक लेल खाय लागल।

ओकरा दिस देखलक। ओ आन्तरिक रूपसँ प्रसन्न भ' रहल छलि। किन्तु ओतेक कम खाय पर ओ दुखी भेलि। ओकरा फेर किछु मोन पड़लै। फेर बाहर भागलि।

एहिबेर किछु विलम्बसँ घूरलि। घूरलि दूध आ लावा ल' क'।

ओ दूधकें तँ चीन्हि गेल, किन्तु धानक लावा नञि चीन्हि सकल। दूधमे हेलि रहल छलै। किछु लावा एकटा दोसर चर्म-पात्रमे छलै। ओकरा चीन्हि गेल, धान लागले छलै। धान ओ चिन्हैत छल।

भूख ओकरा लागले छलै।

ओ खयबाक संकेत कयैलक।

ओ खाय लागल। आ ओ धानसँ लावा बहार क' ओहि पात्रमे देब' लागलि। ओ बड़ीकाल धरि खाइत रहल।

ओ बड़ीकाल धरि खोआबैत रहलि।

आ बड़ीकाल धरि एक-दोसराकें देखैत रहल। बुझैत रहल। जुड़ैत रहल।

जुड़ैत गेलि इषा ओकर पीड़ासँ।

जुड़ैत गेल ओ ओकर प्रसन्नतासँ।

आब दुनूमे भाषाहीन वार्त्ता सेहो होव' लागल। होव' लागल दृष्टियेमे।

सूर्यास्त होयबासँ पहिने सभटा तरुण-युवा-प्रौढ़ जागि जाइत अछि। काष्ठ-व्यवस्थापनमे लागि जाइत अछि। प्रस्तरेक कुठार अछि।

फेर स्थान-स्थान पर अग्नि-स्थान जरि उठैत अछि।

किन्तु नाग थानक अग्नि-स्थान सभसँ पैघ होइत अछि। एहि नाग थानसँ सटि क' नागराज रमटक घर अछि।

इषा दौड़ल आयलि -'बप्पा। ओ जागि गेल, तकैत अछि, ओ अपना सभ जकाँ नञि बजैत अछि, हम बुझिये नञि पबैत छी, तैयो हम बुझि सकैत छी। हम बुझि गेलहुँ, ओकरा पियास लगलै, मांस-खंड देलहुँ, ठीक नञि खा भेलै, हम बूझि गेलहुँ जे ई एकरा रुचलै नञि। तखन हम फेर दौड़लहुँ। दूध-लावा देलहुँ, बहुत प्रसन्नतापूर्वक खयलक, बहुत खयलक, भरि पेट खयलक, बप्पा! तकरा बाद ओ हँसबो कयल...बप्पा! अहाँ स्वयं देखि लिय', अहुँसभ देखियौक, ओ बहुत सुन्दर ढंगे हँसैत अछि, अति सुन्दर, एहन हँसी तँ हम आइधरि नञि देखने छलहुँ। बप्पा! किन्तु ओकरा पीड़ा छै, प्रायः बहुत पीड़ा, हम तँ ओकर मुखे देखिक' बूझि जाइत छी जे पीड़ी भ' रहल छै, तीर बेसी धँसि गेल छलै...उपचारी कहलक अछि। उठल नञि एखनधरि बप्पा। ओ ठीक भ' जायत ने? कहियाधरि ठीक भ' जायत?'

सूचना द' क' ओ रुकल नञि। दौड़लि उपाचारीक घर दिस।

पक्ष बितैत-बितैत ओ पूर्ण स्वस्थ भ' गेल। किन्तु ओकर एकटा हाथ किछु दुर्बल भ' गेलै।

हाथक कारणे इषा ओकरा लेल आरो आवश्यक भ' गेलि। सभ जानय लागल; ई श्वेत बर्बर-अति निरीह अछि, अति सम्मोहक। एकर आँखिसँ स्नेह झरैत रहैत अछि। इषा एकरा लेल अति अनिवार्य भ' गेलि अछि। ओकरा हाथ नञि छै, ओकर सेवा के करतै?

नाग-शिशु इषाक संगहि ओकरा घेरने रहैत अछि। आब ओकरा सभकें डरो नञि लगैत छै।

ओ नागथानमे बैसल रहैत अछि। बैसल रहैत अछि चुपचाप। शिशु सभ चुपचाप खेलैत रहैत अछि लगपासमे। वृद्ध तक्षे जकाँ शिशु सभ ओकरासँ लेपटायल रहैत अछि।

वृद्ध तक्ष देखैत रहैत अछि, ओ आँखि बन्न क' किछु सोचैत रहैत अछि।

सभ वृद्ध, सभ नाग-जन देखैत रहैत अछि, ओ आँखि बन्न कयने बैसल रहैत अछि। बीच-बीचमे आँखि खुजला पर बच्चा सभक संग खेलैत रहैत अछि चुपचाप।

मंत्रमुग्ध भावसँ इषा ओकरा देखैत रहैत अछि। की भ' गेलै ओकरा? ओ तँ ओहिदिन पीड़ित देखि क' सेवा करय गेल छलि, कोनो प्रकारें, ठीक भ' जाय, पीड़ा समाप्त भ' जाय, कतहु चलि जायत।

फेर कियैक होम' लगलै जे कतहु चलि ने जाय? आ वैह गेल कियैक नञि? बुझि गेलै हमर मोन? मोन बूझि गेलै, तैं एना देखैत रहैत अछि? की रहैत छै ओकरा दृष्टिमे? यैह दृष्टि तँ कहियो गुलट केर सेहो रहैत छलै, यैह दृष्टि तँ अन्यो नग-युवाक रहैत छै। मात्र श्वेत-अश्वेतक अन्तर अछि, दृष्टि तँ एके थिक। रंगक अन्तर अछि भाव तँ एके अछि। तँ की सभ मानुष एके थिक? मानुष मानुष एक? रंग किछु नञि? अन्तर किछु नञि? प्रथा किछु नञि? परम्परा किछु नञि? सभकिछु मानुषे? ई मानुष के थिक?

ओ दौड़ि जाइत छलि पानि आन'। प्रायः पिआस ने लागल होइ। ओ दौड़ि जाइत छलि दूध-लावा आन' प्रायः भूख ने लागल होइ। बहुत अज्ञानी अछि ई, किछु बुझिते नञि अछि। इहो नञि बुझैत अछि जे कखन एकरा पिआस लगैत अछि आ कखन भूख? पानि दियौ, पीबि लेत। दूध-लावा दियौ, खा लेत। नञि पीयत, नञि खायत। एहनो कतहु मानुष होइत अछि भला? एकदमसँ अज्ञानी। निरीह। सम्मोहक।

हठात इषाकें मोन पड़लै, अरे! आइ तँ एहि उत्सवक कारणे ओकरासँ भारी गलती भ' गेलै, ओ तँ मांसे-खंड खयने रहि गेल। दूध-लावा तँ देवे नञि केलियै। ओ यैह तँ रुचिपूर्वक खाइत अछि।

आनिकें ओ ओकर मुँह दिस पात्र बढ़ौलक। ओ अपन मुँह घुमा लेलक।

अरे तँ ई रूसि गेल। एकरा रूसबो अबैत छै? ओ आरो अपराधी भावसँ भरि गेलि। किछु बाजलि। प्रायः क्षमायाचनाक शब्द। ध्वनिमे अनुनय छलै। ओ आरो सटि क' बैसि गेलि। अपन एक बाँहिसँ ओहि बर्बरकें बान्हि लेलक आ दोसर हाथसँ ओ पात्र ओकरा मुँहमे लगा देलकै।

एहिबेर ओ पीबय लागल। ओ हाथसँ छानि-छानि क' लावा खुआब' लागलि। ओ खाय लागल।

फेर पानि पिआ देलक।

ओ हँसलि, खिल्-खिल्-खिल्-खिल्।

ओ सटि क' बैसल छलि।

)

ओहिदिन एकटा समस्या ठाढ़ भ' गेलै।

इषा अपन वृद्ध पिता तक्षसँ कहलक, स्पष्ट कहि देलक-'हम एकरेसँ संतान उत्पन्न करब।'

-'ई कोना हेतैक?' ओ जनैत छल, तैयो चौंकल।

चौंकि उठल नागराज रमट।

समस्त नाग-जन चौंकि उठल।

-'ई कोना हेतैक? ई तँ नागक प्रथा नञि थिकै?'

-'नञि थिक तँ बनत।'

-'कोना बनत।'

-'कियैक? अजास सभ कोना बनौलक, गुलट नाग कोना अजास कन्या बनौलक? तहिना बनत, हम बनायब।'

इषाक दृढ़ता देखि सब अवाक् रहि गेल। क्षुब्ध भ' उठल।

इषा, एकटा मृदु यूवती अछि। इषा, अति सुन्दरी अछि। इषा, नागराजक सहोदरा अछि। इषा, नाग वृद्ध पूर्व नागराजक पुत्री थिक। प्रिय पुत्री, अंतिम संतान, स्नेह-दुलारमे पोषित। सर्वजन प्रिय।

-'किन्तु बात तँ नाग-प्रथाक अछि।'

-'हम नाग-प्रथा बदलि देब।'

एहि वाद-विवादक अंत भ' गेलै। निष्कासन।

इषा, आब नाग-ग्राममे नञि रहति।

अंतमे निश्चित भेल जे नागग्रामसँ पूर्व आ अजासग्रामसँ पश्चिम, बीचेमे इषाक खोपड़ी बनतै।

आ ओत' एकटा नव ग्रामे बसि गेल। नागथान बनि गेल। आब तँ पीपरक गाछो लागि गेल। नाग-नागिनक मूर्त्ति स्थापित भ' गेल। ओहि थानमे फेर बच्चा सभ आबि-आबि क' खेलय लागल, पुरान नागग्रामसँ।

वृद्ध तक्ष कहैत छल--'के पहिने ओहि गाछकें छूबि क' आओत?'

आ बच्चा सभ दौड़ि पड़ैत छल।

वृद्धजन गोली-गुलैंती लेने पक्षी सभकें तकैत रहैछ। सभ क्यो नवका नागथानमे बैसैछ।

-'इषा, एहिठामक कृषि हम क' देल करब।' नागराज रमट कहलक।

-'एहि वर्ष तँ कृषि समाप्ते भ' गेल, अगिला वर्ष देखल जायत...अहीक देल तँ खाइत छी, ओही धेनुक तँ दूधो पिवैत छी।

ओ हँसलि आ बाजलि --'ई आर्ज नव-नव बात सोचैत रहैत अछि...।'

'नव-नव बात? से की?'

'कतहुसँ किछु गाछ देखि आयल अछि, कहैत अछि खोपड़ीक निकट लगायब।'

'खोपड़ीक निकट गाछ? से कियैक?' ओ चौंकल।

सभ क्यो चौंकल।

ओ श्वेत बर्बर सेहो बैसल छल। ओ किछु-किछु आब बूझि जाइत अछि। इपाकें सदति पकड़ने रहैत अछि, संकेतसँ पुछैत रहैत अछि, ई की थिक? की कहैत छै एकरा?

जखन कखनो पशुपालनसँ, मुक्त पवैत अछि कि पकड़ि लैत अछि। ई की थिक?

इपाकें सेहो नीक लगैत छै ओकरा बुझेबामे। एक प्रकारक ज्ञान-दानक सुख।

ओ हँसल।

'गाछ सँ की होयत?' नागराज चकित भावसँ पुछलक।

'कहैत अछि, ओहिमे फल लगैत छै, ओ खायल जा सकैत अछि।'

'खायल जा सकैत अछि? मरि नञि जायत।'

'कहैत अछि, नञि। पहिने वेह खाक' देखायत। ओ जतय पहिने रहैत छल, ओम्हर लोक खाइत अछि।'

'खाइत अछि? कोम्हर रहैत छल?'

'पश्चिमोत्तर दिस देखबैत अछि। ई एकटा बात आरो कहैत अछि...' इपा बाजलि।

'की?'

'नित्य नहेबाक लेल।'

'नित्य?'

'हँ, नित्य...।'

सभ चौंकि उठल। एना तँ नञि होइत छल। ई श्वेत बर्बर की करय चाहैत अछि?

'कहैत अछि, एहिसँ सभक कल्याण होयत, समस्त नागजनक कल्याण होयत।'

'समस्त नागजनक?' नागराज चौंकल। सभक कल्याण? सबहक?

'ओ स्वयं नित्य नहाइत अछि?'

'नित्य।'

अपन वस्त्रकें दू दुकड़ा क' लेलक अछि।

'किन्तु हमसभ कोना नित्य नहायब?' ई प्रथा तँ नञि अछि?' नागराज असमंजसमे पड़ि गेल।

'प्रथा नञि अछि, इषा मुस्कायलि --तें नञि होयत, एहन बात तँ नञि अछि, नागकन्या तँ अपरिचितक संग संतान नञि उत्पन्न करैत छलि, हम कोना निश्चय क' लेलहुँ, आब ईहो प्रथा चलत...दोसर बात, हम तँ नित्य नहाबइयो लगलहुँ।'

'नित्य?' नागराज रमट ओकरा दिस ताकल।

'नित्य। एहिबेर वृद्ध तक्ष उत्तर देलनि --हम तँ देखिये रहल छी...आ नहयलाक बाद ई आरो सुन्नरि लगैत अछि, नागदेव जकाँ पवित्र। शीतकाल बितैते हमहुँ नित्य नहाबय लागब...।'

'किन्तु हमसभ नित्य कोना नहा सकब?' नागराज प्रश्न कयलक।

'कियैक? शीत लागत, ते ँ?' इषा हँसलि।

ओ एम्हर आरो सुन्नरि भ' गेलि अछि। रमट देखलक।

'नञि। हमरा सभ लग तँ एकेटा चर्मवस्त्र रहैत अछि कि ने? ओ फाटि जाइत अछि तखने बदलैत छी कि ने?

'ओहिमे की अछि? दूटा राखब, यैह तँ ईहो कहैत अछि, ई तँ एकटा आरो अद्‌भुत बात कहैत अछि...।' इषा बजैत-बजैत ओहि श्वेत बर्बर दिस देखलक।

ओ एकरे दिश तखनसँ निरन्तर तकैत जा रहल छल। ओ आब किछु-किछु बुझियो सकैत अछि। किन्तु किछु बाजि नञि पबैत अछि। बजबाक बहुत इच्छा होइत रहैत छै। ओ इषाक संग मीलि एकटा काज आरो करय जा रहल अछि। अपन आ इषाक भाषाकें मिला क' एकटा तेसर भाषा बनबय चाहैत अछि, जाहिमे दुनू भाषाक मिश्रण रहत तथा ओकर अपने भाषाक शब्द अपन रूपकें विकृत क' ओहि नव भाषामे प्रयुक्त होयत। नित्य रातिकें

बहुत-बहुत कालधरि इपाकें सिखवेत आ स्वयं सिखैत रहैत अछि। ओ अछि जे ई सुगम आ सर्वजन सुलभ।

ओ बूझि रहल अछि, इपा ओकरे बात कहि रहल अछि। ओ प्रसन्न भेल।

'की अद्‌भुत कहैत अछि?' नागराज रमट पुछलक।

इपा हठात् खोपड़ीमे चलि गेलि। ओहि श्वेत बर्बरक नीबी (विष्ठा) उठा आनलि जे ओ मृगचर्मक नीचामे धारण करैत अछि। बाजलि --'दे ओ वस्तु थिक, एकरा ई 'वस्तर' कहैत अछि, कहैत अछि, एकर बीया छै, वाओग कयलासँ वृक्ष होइत छै, ओहिमे फल लगैत छै, ओहिसँ जे अछि, ताहिसँ ई 'वस्तर' बनाओल जाइत छै...ई पहिरवामे मृदु होइत जेम्हर रहैत छल, लोक सभ यैह करैत छलै।'

'अद्‌भुत अछि। ई तँ बहुत मृदुल लगैत अछि...।'

सभगोटे ओकरा छूवि-छूवि देखय लागल। सभ चकित रहि श्वेत बर्बर तँ वस्तुतः चमत्कारी अछि।

'तँ एकर बीया कोम्हर भेटैत अछि? हमसभ अवश्य आनब।'

तखने एकटा घटना घटल।

देबालक बाहर किछु हल्ला जकाँ भेल।

भीतर अयबाक रस्ता अति संकीर्ण अछि। धीरे-धीरे आठ-दस न भीतर आयल।

'नागराज!' ओ सभ हपसि रहल छल।

'की अछि?' ओ पुछलक।

'हमसभ तकिते आयल छी।' एकटा बाजल।

'कियैक? की बात अछि?'

'ओहि पारमे जे नागजन छल, सभ आइ पार क' गेल, एहि प गेल अपन-अपन अन्न आ पशु ल' क'...

'कियैक?'

'ओहि पारमे जे दुर्ग बनि रहल छल, ओकरा तँ हमरे सभ जकाँ बना रहल छल ने?'

'फेर?'

'आइ प्रातहिसँ ओकरा लगपासमे बहुत रास श्वेत बर्बर देखबामे आयल। ओसभ डरि क' पार क' गेल अछि।'

'श्वेत बर्बर!' नागराज रमट चौंकि उठल।

सभ स्तम्भित रहि गेल।

श्वेत बर्बर एतेक निकट? कियैक? कथी लेल? ओकरा तँ कृष्णेजन बना रहल छल? ओहिठाम श्वेत बर्बर कतयसँ आबि गेल? के थिक ओ सभ?

सभ विस्मित रहि गेल।

सभ चिन्तित भ' उठल।

ओ श्वेत बर्बर बूझि नञि सकल। ओ नवागंतुक नाग युवा किछु एहि प्रकारें बाजि रहल छल जे ओ किछु नञि बुझि सकल। किन्तु एतबा अवश्य बूझि गेल जे एकरा सभपर किछु संकट आबि गेल अछि। तें सभ चिन्तित भ' उठल अछि।

इपा सेहो चिन्तित भ' उठलि अछि। ओ इपाक चिन्ता देखिक' विकल भ' उठल। ओकरासँ गप करबाक लेल आतुर भ' उठल।

ओ बहुत धीरे-धीरे, बुझा-बुझाक' संकेत आ अभिनयक संग बजैत अछि, अधिकांश बूझि जाइत अछि, ई सभ ओना नञि बजैत अछि।

तें ओकरा एकान्तक तीव्र इच्छा भेलै, जाहिसँ इपासँ गप्प क' सकय आ किछु ठीक-ठीक बूझि सकय।

'ओ सभ कोम्हर अछि?' नागराज चिन्तित भावसँ पुछलक।

'के? श्वेत बर्बर?'

'नञि, अपन नागजन?' नागराज क्रुद्ध भ' उठल।

सभ डरि गेल।

सभ बुझि गेल, ई क्रोध चिन्ताक कारणे अछि।

'पुरान नागथान लग।'

'चलू।'

आ नागराज बहरा गेल तेजीसँ।

सभ पाछाँ-पाछाँ भागल।

मात्र वृद्ध तक्ष रहि गेल। ओहो चिन्तित छल, ठोर पटपटौलक --'ई अशुभ अछि श्वेत बर्बर अशुभ अछि।'

इषा सुनि गेलि। बाजलि --'बप्पा। मानुष अशुभ नञि होइत अछि, ओकर कार्य।...फेर हमसभ ओकरा सभक कोन अशुभ कयलहुँ अछि जे ओ हमर अशुभ करत?'

'इषा! -वृद्ध तक्ष अति चिन्तित मुद्रामे बाजल-'हमरा ज्ञात अछि, पूर्वजसँ सुनलहुँ अछि, ओ सभ भयंकर होइत अछि, ओ सभ अकारणे आक्रमण क' बैसेत अछि आ मारैत जाइत अछि...। भयंकर बर्बर होइत अछि...।'

'किन्तु बप्पा। ईहो तँ वैह थिक, कहाँ किछु केलक?'

'ई तँ एकसरे अछि, फेर अस्त्र-शस्त्रहीन सेहो अछि...।' ओ उठल आ बाहर दिस चल गेल।

इषा सेहो गंभीर भ' गेलि।

ओ किछु बुझि नञि सकल तें व्यग्र भ' उठल। ओ ईहो जानलक जे ओकरो दिस संकेत कयल गेल अछि।

वृद्ध तक्षक केर जाइते पुछलक-'इषा?'

ओ निकट अयबाक संकेत कयलक।

'ऊँ'।' लग अबैत इषा ओकरा मुँह दिस ताकय लागलि। मुँह पर चिन्ताक भाव छलै।

'की अछि? की भेलै?' ओ ओकरा हाथकें अपन हाथमे लैत मृदुतासँ पुछलक।

ओ धीरे-धीरे संकेत तथा अभिनयसँ बुझाव' लागलि।

ओ बूझि रहल अछि। अंतमे बाजल --'चिन्ताक बात नञि। ओ किछु क्षण सोचैत रहल, ओकरा किछु शंका भेलै, पुनः बाजल 'अहाँ जनैत छी, हमहुँ आर्ये थिकहुँ...हम काल्हि प्रातहि ओम्हर जायब आ...युद्धक कोनो संभावना नञि होब' देब...।'

आ ओ अपन आँखि बन्न क' लेलक।

सूर्यास्त होब' जा रहल छल।

इषा धीरेसँ हाथ खींचि उठलि आ वृद्धा जननी दिस चलि गेलि।

ओम्हर पुरान नागथानमे सभटा नागजन जमा छल।

'किन्तु एकर की निश्चय अछि जे ओ सभ आक्रमणे करत?' नागराज पुछलक।

'एकर निश्चय तँ नञि अछि, किन्तु ओकरा सभक बात हमरा पूर्वजसँ ज्ञात अछि जे ओ सभ अकारणे आक्रमण क' बैसैत अछि।' --वृद्ध तक्ष कहलक।

'ठीक अछि, हमसभ तैयारी करब आ युद्ध लेल प्रस्तुत रहब...हमर नागिनो सभ प्रस्तुत रहति। पूर्वकालेसँ ओ सभ अपन दंशक्रियामे पटु रहलि अछि, एकबेर ओकरा सभकें फेर अपन पटुता देखाबय पड़तै...ठीक अछि, अहाँ सभ जतय चाही, अपन खोपड़ी बना सकै छी।'

ओहि राति बहुत काल धरि इषा आ ओ श्वेत बर्बर जागल रहल।

आतंकक कारणे दुनू नागथानक नित्य उत्सव किछु पूर्वे समाप्त भ' गेल छल। सभ डरल छल।

'अहाँ कियैक एते डरि रहल छी?' ओ श्वेत बर्बर इषाकें अपना दिस खींचि लेलक।

ओ ओकर विशाल वक्ष-प्रदेशमे सिमटि गेल छलि, ओकरासँ लेपटा गेल छलि। बाजलि-'अहाँ लग की डर? जहियासँ अहाँकें देखलहुँ अछि, हमर डर मेटा गेल अछि।...अहाँकें संभव ज्ञात नञि, हम नागिन सभ बहुत भयंकर होइत छी, अकारण जँ केओ आक्रमण क' दिअय, तँ तत्काल हम भागियो सकैत छी, किन्तु अवसर पावि शत्रुकें छोड़ितो नञि छी...एहिमे हमरा सभसँ बेसी पटु आर क्यो नञि होइत अछि...।'

'एकर आवश्यकता नञि पड़त...हम काल्हि प्रातहि ओम्हर जायब...।'

आ ई कहि कऽ ओ ओकरा अति तीव्रतासँ अपन वक्षमे सटवैत, ओकर छोट सन सुकोमल तत्वंगी देह पर हाथ फेर' लागल।

किन्तु ओहिदिन प्रातः यमुना तटक रक्तपातसँ सूर्यक प्रातःकालीन रश्मि आरो रक्तिम भ' उठल छल।

ओ श्वेत बर्बर अपन अभ्यासक कारणे सूर्योदयसँ पूर्वे उठि जाइत अछि आ उषाक सौन्दर्य निहारैत रहैत अछि आ गुनगुनबैत रहैत अछि। किन्तु ओहि दिन किछु बिलम्ब भेल।

ओ जहिना उठिक' नागथान पर आयल कि चौंकि उठल।

ओकर खोपड़ी नागग्रामक पूर्वी छोर पर अछि। ओकरा लगलैक जेना पश्चिमी छोर पर बहुत जोरसँ कोलाहल भ' रहल छै।

(

जहिना ओ वहरायल, देखलक, बहुत रास नागजन घायल अवस्थामे पूर्व दिस भागल आवि रहल अछि। पशुसभ चारूकात भागल जा रहल अछि। खोपड़ी सभसँ आगि उठि रहल अछि।

भयंकर आतंककारी हाहाकार मचल छल। चारूकात अराजकता पसरल छलै।

एही बीच अश्वसभक हिनहिनायब सुनलक।

ओ दौड़ल पश्चिम दिस।

आतंकित भावसँ भागय बलाक संख्या बढ़ले जा रहल छल। ओ दौड़ल जा रहल छल।

'आटव्य! आटव्य!! स्तब्ध!!!'

ओ श्वेत बर्बर अत्यन्त उच्च स्वरमे चिचिआयल।

ओकर चिचिआयब यमुना तटसँ घूरि पुनः नागग्राममे पसरि गेलै।

'आटव्य! युद्ध रोकू। रोकू युद्ध, ई सभ अहाँक मित्र थिक, ई सभ अहाँक शत्रु नञि थिक...। रोकू, तुरत रोकू। हम आदेश दैत छी।'

'राजा वीतिहोत्र।'

प्रधान सेनानी आटव्य जोरसँ युद्ध स्थगनक शंखध्वनि केलनि तथा अपन अश्व परसँ कूदि गेलाह। ओ आश्चर्यचकित छलाह। राजा वीतिहोत्र एतय? एहि अवस्थामे?

शंखध्वनि सुनि सभ क्यो चौंकि उठल। की भेल? कियैक रुकल युद्ध? भेटि गेल धेनु सभ?

किन्तु ओहि शंखध्वनिक सुनिते युद्ध रुकि गेल छलै।

ता अपन-अपन अश्व पर, राजा असंग, सोमाश्व मंत्राक्ष एवं किछु वरिष्ठ सेनानी पहुँचि गेल छलाह।

'राजा वीतिहोत्र। अग्रज।'

सभ विस्मित छल। सभ किंकर्त्तव्यविमूढ़।

'बात पाछाँ होयत...पहिने अपन सैनिक सभकें प्रधान सेनानी नाग ग्रामसँ पूर्व दिस जमा करथि, ओतहि हमर आवास अछि। आ जानि लिय' ई नाग-जन अति निरीहे नञि अछि अपितु आर्यसभक उत्तम मित्रो भ' सकैत अछि, आ अछि। वीतिहोत्र दृढ़तासँ पुनः कहलनि, --युद्धकें शीघ्र रोकू, युद्धसँ कोनो बातक समाधान नहि भ' सकैत अछि।'

'किन्तु राजन राजा असंग कहलनि --ई तँ सामान्य युद्ध नहि थिक, ई तँ गविष्ठि युद्ध थिक, आर्य सभक प्रतिष्ठा युद्ध, जाधरि धेनुसभ प्राप्त नहि भ' जायत, युद्ध कोना सकत?'

'किन्तु धेनुहरण ई नागसभ तँ नहि कयलक अछि?'

'हमरा तँ ज्ञात भेल अछि, हमर सभक धेनु एम्हरे आनल गेल अछि।'

'धेनुसभ एहिसँ पूर्व अजासमे अछि।'

'तँ हम सभ अजासेसँ युद्ध करब। राजने कहथि, बिनु धेनु छोड़ौने, आर्य जन कोना घूरि सकैत अछि, कुरु जनपद एतेक पतित तँ नञि भ' गेल अछि?' एहिबेर उत्तर सोमाश्व मंत्राक्ष देलनि।

वीतिहोत्रमे आर्यरक्त जागि उठल, किछु सोचिक' कहलनि--'ठीक अछि, धेनु सभ पूर्व दिस अजास ग्राममे अछि, जतए धरि संभव हो रक्तपात नञि हो, हम मात्र एतबे चाहैत छी। कियैक तँ एम्हरूका लोक निरीह आ निश्छल होइत अछि, हम यैह अनुभव कयलहुँ अछि। वीतिहोत्र पुनः कहलनि--अहाँ सभ अजास ग्राम आइ, ओकरा सभकें मित्र बनाक', धेनु सभ ल' आनी। आर्यजन एकरा सभकें जँ अपन मित्र बना लैथि तँ दुनूक उपकारे होयत। शत्रुतासँ कहियो शत्रुता नञि मेटायल अछि, नञि मेटा सकैत अछि। शांति भेटैत अछि मित्रतासँ, सौहार्द्रसँ। युद्ध कोनो समस्याक समाधान नञि, ओ स्वयं अपनामे भयंकर समस्या थिक। समस्या थिक मानव जीतिक, समस्या थिक मानव कल्याणक, समस्या थिक विकासक। हमर उद्देश्य मानव थिक, युद्ध नञि। युद्धमे शांति नञि अछि। आ शान्तिए हमर सभक कामना थिक।'

आ विचार विमर्शक पश्चात् अंतमे निश्चय भेल जे राजा वीतिहोत्रेक अनुसार ओ सभ अजास ग्रामसँ अपने धेनुसभ ल' क' घुरताह। राजा रमट सेहो जायत।

आ ओसभ पूर्व दिस बहरा गेलाह।

एधनधरि बहुत रास नाग जे एम्हर-ओम्हरसँ नुका क' देखि सुनि रहल छल, सहटिक' वीतिहोत्र लग आबि गेल।

ओ सभ किछु बूझि नञि सकल ठीक ठीक। किन्तु एतबा अवश्य भेल जे एकरे कारणे आइ ओकर सभक प्राण बचल अछि। ई वस्तुतः देव थिक। नागदेव तुल्य।

ता इषा सेहो आबि गेल छलि।

भागल घायल जन, ओकरा सभकें पूर्व दिस जाइत देखि घूरि गेल छल, घूरि रहल छल, पुरान नाग थान मे जमा भ' रहल छल।

नागराज रमट सेहो किंचित घायल भ' गेल छल, बाँहिमे भाला लागल छलै, ओहो आबि नाग थान मे बैसि गेल, थाकल जकाँ।

सभ क्यो उदास आ हताश छल। घायल सभक उपचारमे उपचारी लागि गेल।

जन क्षति बेसी नञि भेल छलै। मात्र खोपड़ी सभ किछु बेसी जरि गेल छलै, जे आर्यजनक युद्धक एकटा विशेषता होइत अछि।

जे मृत भ' गेल छल, ओकर सभक स्वजन उदास नाग थानमे जमा भ' रहल छल।

किछु स्वस्थ नागजन तथा इषाक संग राजा वीतिहोत्र, जकरा ओ सभ एखनधरि श्वेत बर्बर कहैत रहल छल, मृतक सभकें देखय पश्चिम दिस विदा भेल।

नञि। अधिक जन-क्षति नञि भेल छलै।

आर्जजन उषाकालेमे यमुना पार भेल छल आ आगि लगायब प्रारम्भे कयने छल। जे दू-चारि जन भेटलै, तकरा मारि सकल छल।

नाग जन भागयमे पटु होइत अछि जा तीव्र सेहो। बहुत भागि गेल छलै, ओसभ आव घूरि-घूरि आबि रहल अछि। श्वेत बर्बरे किछु कयलक, जाहिसँ ओ सभ एकरा सभकें छोड़ि, अजास दिस चलि गेलै। धेनुयो तँ ओकरे सभ लग छै। ई सभ तँ निर्दोषे छलै।

हठात् वीतिहोत्र चौंकि उठलाह।

इषा स्तब्ध रहि गेलि निमिष भरिक लेल, फेर कनैत दौड़लि आ मृत वृद्ध तक्षक केर देहसँ लपटि क' जोर-जोरसँ कान' लागलि।

हुनक मृत देह, एकटा खोपड़ी लग पड़ल छल।

सभ क्यो देखि क्षुब्ध रहि गेल। दुखी भ' उठल।

दुखी वीतिहोत्र सेहो भेलाह इषाकें एहि प्रकारें कनैत देखि हुनको नेत्र बहय लागल।

हुनका ज्ञात रहनि, वृद्ध तक्ष नाग ग्रामक सर्वाधिक आदरणीय जन रहथि आ वयोवृद्ध सेहो।

अपन जीवनमे ओ अनेक युद्ध लड़ल छलाह। आ सदति विजयी रहलाह, कहिओ पराजित नञि भेलाह। सदति अगिले पांतिमे रहैत छलाह। हुनक एकटा आरो अभ्यास रहनि, नाग सभक युद्ध कलाक विपरीत ओ युद्धसँ कहियो भागलाह नञि। भयंकरसँ भयंकर युद्ध ओ अपन जीवनमे लड़ल छलाह।

वीतिहोत्र अति अनुरागपूर्वक इपाकें उठा लेलनि, सांत्वना देब' लगलाह।

नाग सभमे मृतककें गाड़बाक प्रथा अछि। कुल दू गाही (दस) जन मरल छल, जाहि मे बच्चे सभ बेसी छल। सभकें सामूहिक रूपसँ यमुना तट पर गाड़ि देल गेल।

नाग जन सामूहिक मृत्युक दिन खाइत नञि अछि आ आखेटो पर नञि जाइत अछि।

सभ आबि-आबि नवका नागथान पर बैसि गेल छलै। स्त्री सभ अपन पशु सभकें ताक' आ ओकर व्यवस्थामे चलि गेल छलि।

ओहि राति बहुत काल धरि नव नागथानमे आर्य सभक विजय उत्सव चलैत रहल। मात्र पिता मृत्युक कारणे रमट उदास छल।

सन्ध्यासँ पूर्व अपन सभटा धेनु ल' घूरि आयल छलाह राजा असंग।

युद्ध नञि भेल नागराज रमटक कारणे।

धेनुहरणो तँ अनायासे भेल छल।

बहुत रास अजास जन दास बनब स्वीकार क' लेलक।

दास सभकें अजासे ग्राममे रह' देल गेल तथा राजा असंग, मंत्राक्षक परामर्श पर अपन किछु दास सैनिक सेहो ओतहि छोड़ि आयल छलाह।

ओहि राति पैघ-पैघ अग्निकुंड बनाओल गेल नागग्राममे। नागजनसँ जे अज तथा मेष उपहारमे भेटल, बासनक अभावमे ओकरा पका क' खायल गेल।

वीतिहोत्रक प्रयाससँ दुनू मे नाग आ आर्य जनमे मित्रता भ' गेल। नाग सभ अधीनता स्वीकार क' लेलक। अजासे जन जकाँ।

'किन्तु वीतिहोत्र कहलनि, --ई मित्रता होयत, अधीकता नञि। नागजन स्वतंत्रे रहत, दास नञि बनत तथा स्वतंत्रे रूपसँ यमुनाक पूर्वी तट पर निवास करत आ पश्चिमी तट पर बसल कुरुक्षेत्रक रक्षा पूर्व दिससँ एवं आर्यजन पश्चिमसँ एकरा सभक रक्षा करैत रहत।'

सभकें ई बात पसिन्न पड़लैक।

नागोजन प्रसन्न भेल आ आर्योजन।

सोमाश्व मंत्राक्ष कहलनि --'राजन।'

'सोमाश्व।' वीतिहोत्र अपना दिस ताकि क' राजनक सम्बोधन करैत देखि कहलनि --हम तँ राजा नञि, विशः सेहो नञि, एकटा निष्कासित जन थिकहुँ, फेर ई सम्बोधन?'

'राजन्, --मंत्राक्ष कहलनि --अहाँ पूर्व कुरु जनपदसँ निष्कासित छलहुँ, यमुना तट पर जे नव कुरुक्षेत्र बसय जा रहल अछि, जेहि सँ नञि। आ जतयधरि अभिषेकक प्रश्न अछि, ओ तँ समये पर आ विधानपूर्वके होयत किन्तु राजा तँ अहाँ निर्वाचित भ' गेलहुँ।'

'राजा?' वीतिहोत्र चौंकलाह।

सभ क्यो चौकि उठल।

राजा असंग चौंकि क' अवाक् रहि गेलाह। सोमाश्व मंत्राक्ष दिस ताक' लगलाह विस्मित भावसँ। यैह ठीक अछि। ओ तँ चाहिते छथि, जे वीतिहोत्रे कुरुक्षेत्रक राजा होथि, यैह उचितो थिक। ओ योग्य सेहो छथि, श्रेष्ठो छथि, श्रुतिधरो छथि आ अग्रज कुलपो छथि। किन्तु...किन्तु...।

प्रधान सेनानी आटव्य चकित भावसँ सोमाश्व मंत्राक्ष दिस तकलनि। एखनधरि तँ एहि प्रसंगमे कोनो बातो नञि भेल अछि। सोमाश्व की कहि रहल छथि? कुरु जनपदक तँ विधिवत राजा असंग निर्वाचित छथि, हुनक अभिषेको सम्पन्न भ' गेल छनि, फेर ई केहन प्रस्ताव? ई तँ विदथक काज थिक...?

सोमाश्व मंत्राक्ष एक क्षणधरि दुनूक भाव देखैत रहलाह, फेर विहुँसलाह, यैह हुनक अभ्यास छनि। बजलाह --'राजा असंग तँ नियमतः कुरुजनक राजन् छथि, परुष्णीसँ ल' क' पश्चिमी तट धरिक राजा। किन्तु अहाँ तँ आर्यावर्तक राजा भेलहुँ, अजासजन तँ अहाँकें राजा मानियो लेलक छथि, ओ सभ आर्यावर्तक दास थिक। हम सबटा गप्प कऽ नेने छी अजास जनसँ।

'आर्यावर्तक राजा?'

एक बेर फेर सभ चौंकल।

सोमाश्व मंत्राक्ष तँ अद्भुत छथि। ई तँ चमत्कारे थिक।

'आर्यावर्त? ई आर्यावर्त की थिक सोमाश्व?' वीतिहोत्र पुछलथिन आश्चर्यमे डूबिक'।

'राजन --मंत्राक्ष कहलथिन --सुवास्तु तटसँ ल' क' सरस्वती-दृषद्वती तट धरिकें एखन धरि ब्रह्मर्षि देशक रूपमे जनैत आयल छी। किन्तु आर्यजनक

प्रसार आरो आगाँ भ' गेल अछि, आब हमसभ गंगा तट धरि पहुँचि गेल छी, एकरे नाम हम आर्यावर्त निश्चित कयल अछि। अहाँ एहि आर्यावर्तक प्रथम राजन् होयब। तत्काल अहाँक राज्यक सीमा यमुनासँ गंगा तट धरि रहत आ अहाँक मुख्य ग्राम गंगाक पश्चिमी तट पर रहत, अहाँक मुख्य प्रजा अजास-जन रहत। ई नाग जन सेहो मित्र-भावसँ अहींक प्रजा रहत तथा उत्तर आ दक्षिणसँ अहाँक रक्षा करत आ अहाँ हिनक रक्षा पूर्वसँ करब।'

सभ क्यो अवाक् भावसँ सुनि रहल छल।

कतेक निश्चित आ सुविचारित योजना अछि? कतेक स्पष्ट? वस्तुतः सोमाश्व महान् छथि। ओ आगाँ विहुँसिक' कहलनि--'राजन्! हमहुँ अहीं जकाँ कुरुजनपदक ऋषिग्रामसँ निष्कासिते छी...हमरो कुरुक्षेत्रमे बसवाक अधिकार नञि अछि, हम राजन् असंग पर पक्षपातक आरोप नञि आब देब' चाहैत छी, अतः हमहुँ अहाँक प्रजा बनिक' गंगे तट पर निवास करब।'

'ई नञि होयत --राजा असंग कहलनि --सोमाश्वकें हमरे संग कुरुक्षेत्रमे रह' पड़तनि।'

'राजन् हम तँ एक निष्कासित जन थिकहुँ, कुरुग्राममे कोना रहि सकैत छी?'

'ई तँ नव कुरुग्राम होयत ने?'

'किन्तु रहत तँ वैह पुरने विशःजन ने? एकटा पुरान सामाजिक अपराधीकें अपन नव जनपदमे पाबि ओ की सोचताह? राजन् एहिसँ दोषमुक्त रहि पौताह? ई हमरासँ कोना सहल जायत?' ओ हँसलाह।

किन्तु राजा असंगकें हँसी नञि लगलनि। हुनका लगलनि जेना ओ एकसरे पड़ि गेल छथि। कुलप अग्रज भेटबो कयलनि तँ अलगे रहताह आ ई आर्ये-हितमे होयत। ओ की करथि?

मंत्राक्ष हँसिक' आगाँ कहलनि--'ई छोटसन रूपवती रानी इषा हमरा बहुत नीक लगलीह अछि, हम हिनके लग रहय चाहब, कम-सँ-कम नित्य देखि तँ लेल करब...?'

इषा अपन नाम सुनि चौंकि उठलि आ सेहो एकटा अपरिचितक मुख सँ। वीतिहोत्र दिस ताकलि।

वीतिहोत्र परिचय दैत, मंत्राक्षक भावनाकें कोनो प्रकारें ओहि मिश्रित भाषामे व्यक्त कयलनि।

नागराज रमट सेहो वीतिहोत्र नथा इपाक वात किछु-किछु वूझि रहल छल। इपा रानी वनलि गंगा तटक आ आर्यजनमे एतेक सम्मान भेटलै, ई जानि अति प्रसन्न भेल। सभटा दुःख विसरि गेल।

ओहो हँसल।

अन्य वैसल नागजनकें सेहो अपन भाषामे कहलक।

सभ हँसय लागल।

ओहि राति सम्मिलित रूपसँ यमुनाक तट पर युद्धोत्सव मनाओल गेल।

ओही राति प्रथम-प्रथम नागजन आ आर्यजन परस्पर मिलल, परस्पर मित्र वनल आ मित्र भावसँ रहल जकर अनेक प्रमाण कालान्तरक आर्य-नागक वैवाहिक सम्वन्ध अछि।

ओही राति प्रथम-प्रथम राजा वीतिहोत्रकेँ विवाहक पश्चात् आर्यावर्तक प्रथम रानी, इषा भेटलनि।

ओहि रातिक पश्चात् घटना सव अति तीव्रतासँ घटल। आ आर्यावर्तक जन्म भेल।

❑